जयपुर के बाहर प्रदेश का एकमात्र एन.ए.बी.एच. प्रमाणित हॉस्पीटल

जी बी एच आरोग्यम् बुलेटिन

ISO 9001 : 2008

GBH AMERICAN HOSPITAL

वर्ष – 3 | अंक – 11–12 | जुलाई–अगस्त, सितम्बर–अक्टूबर 2013

कैंसर को देंगे मुंह तोड़ जवाब

अब जीबीएच कैंसर हॉस्पीटल उदयपुर में मिलेगी विश्वस्तरीय कैंसर चिकित्सा

उदयपुर शहर का महत्व ऐतिहासिक एवं पर्यटन के मानचित्र पर उल्लेखनीय रहा है। दक्षिणी राजस्थान का यह पूरा क्षेत्र आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भी है। किन्तु उदयपुर ही नहीं पूरा उदयपुर संभाग कई दृष्टियों जैसे चिकित्सा, स्वास्थ्य, शिक्षा, जन्म–मृत्युदर आदि में राष्ट्रीय अनुपात से काफी पिछड़ा रहा है।

सामान्य बीमारियों के उपचार हेतु भी यहां से कुछ वर्ष पूर्व तक लोगों को अहमदाबाद, मुंबई आदि बड़े शहरों में जाना पड़ता था। उदयपुर में कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के उपचार की तो कल्पना करना भी संभव नहीं था।

इस गंभीर बीमारी की पहचान, जांच एवं उपचार की विश्वस्तरीय सुविधाएं उदयपुर में ही न्यूनतम दरों पर उपलब्ध हो, इस उद्देश्य को लेकर उदयपुर की गोगुंदा तहसील के मूल निवासी, अन्तरराष्ट्रीय कैंसर रोग विशेषज्ञ, अमेरिकन तथा यूरोप के कई कैंसर संस्थानों से जुड़े डॉ. कीर्तिकुमार जैन ने शहर के एयरपोर्ट रोड स्थित बेडवास क्षेत्र में 300 शय्याओं से युक्त जीबीएच कैंसर हॉस्पीटल की स्थापना करने का प्रयास किया है।

विश्वस्तीय जांचें उत्कृष्ट चिकित्सा सुविधा

- कैंसर सर्जरी
- कीमोथैरेपी
- रेडिएशन थैरेपी
- मेडिकल ऑन्कोलॉजी

इस अस्पताल में कैंसर उपचार संबंधी सभी प्रकार की विश्वस्तरीय एवं आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं एक ही छत के नीचे उपलब्ध है। ये सुविधाएं समाज के हर तबके की स्वास्थ्य सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम दरों पर उपलब्ध करवाई जायेगी।

मेवाड़ एवं इससे जुड़े मध्यप्रदेश के बड़े क्षेत्र में कैंसर उपचार एवं अन्य स्वास्थ्य सुविधाओं के लाभ हेतु यह हॉस्पीटल मील का पत्थर साबित होगा।

स्वप्नदर्शी

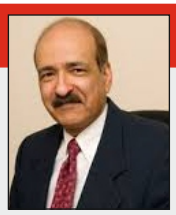

डॉ. कीर्ति जैन
सी.एम.डी.
- जी.बी.एच.कैंसर हॉस्पीटल
- जी.बी.एच.अमेरिकन हॉस्पीटल

पीडियाट्रिक लेप्रोस्कॉपिक सर्जरी : दो बालकों को मिला बेहतर जीवन

दक्षिण राजस्थान में पहली बार हुई बच्चों में लेप्रोस्कॉपिक सर्जरी

उदयपुर। पीडियाट्रिक लेप्रोस्कॉपिक सर्जरी यानि कि बच्चों में दूरबीन के जरिए होने वाली शल्य क्रिया। चिकित्सा के इस नए आयाम से समूचे दक्षिणी राजस्थान को अवगत करवाया जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल ने। यह अवधारणा थी कि बच्चों में लेप्रोस्कॉप के जरिए होने वाली शल्य क्रिया के परिणाम उतने सकारात्मक नहीं होते हैं जितने की बड़ों में होने वाली लेप्रोस्कॉपिक चिकित्सा के कारण होते हैं।

गत दिनों दो वर्षीय राघव (बदला हुआ नाम) जो दांया हर्निया से ग्रसित था, जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के अनुभवी डॉक्टर्स की टीम द्वारा अत्याधुनिक उपकरणों की मदद से यह लेप्रोस्कॉप के जरिए सफल ऑपरेशन किया गया।

साथ ही ढाई वर्षीय विनित (बदला हुआ नाम) की पुरूष ग्रंथी जो कि पेट के अंदर ही दबी हुई अवस्था में पड़ी थी। इसे भी दूरबीन द्वारा ढूंढ़ कर आपूर्ति नलियों सहित (पुरूष ग्रंथी की थैली) वृषण कोष में डाल कर बांध दिया जिससे वह अपनी स्थिति मे बने रहे। समूचे दक्षिण राजस्थान तथा सीमावर्ती क्षेत्रों में बच्चों की लेप्रोस्कॉपिक सर्जरी के ये दोनों अनूठे मामले हैं।

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के जनरल एण्ड लेप्रोस्कॉपिक सर्जन डॉ. नवीन गोयल ने बताया कि इसी तरह राघव के माता-पिता को एक अन्य अस्पताल के डॉक्टर्स ने परंपरागत तरीके से यानि कि चीर फाड़ के जरिए ऑपरेशन होना बताया गया। ऐसे में उसके माता-पिता हमारे पास आए। हमने यह सर्जरी लेप्रोस्कोप द्वारा कर जहां समय और पैसा की बचत की, वहीं परांपरागत सर्जरी की अपेक्षा उसे जल्दी डिस्चार्ज भी कर दिया गया।

परंपरागत सर्जरी द्वारा इस प्रकार की चिकित्सा बेहद मुश्किल रहती है। ऐसे में पूरे पेट को काट कर पुरुष ग्रंथी को ढूंढ़ना, फिर उसे सही जगह स्थापित करना होता है। इसके परिणाम भी उतने सकारात्मक नहीं होते है। ऐसी स्थिति में यह भी संभव है कि इस पूरी प्रक्रिया में बच्चें की पुरूष ग्रंथी भी क्षतिग्रस्त हो सकती थी। घंटों चलने वाली इस पेचिदा प्रक्रिया में धन तथा श्रम के साथ घावों को भरने में समय भी ज्यादा समय लगता। लेप्रोस्कॉप के जरिए इस पूरी प्रकिया को अधिक बेहतर परिणामों के साथ एक घंटें में पूरा कर दिया।

ये दोनों ऑपरेशन में जनरल एण्ड लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉ. नवीन गोयल के नेतृत्व में एनेस्थेटिक्स डॉ. शिल्पा शारदा, डॉ. पीयूष गर्ग तथा डॉ. क्षितिज रांका के सक्रिय सहयोग से संभव हुआ।

क्यों नहीं होती थी बच्चों में लेप्रोस्कॉपिक सर्जरी ?

डॉ. गोयल ने बताया कि लेप्रोस्कॉपी के प्रक्रिया में रोगी के पेट को कार्बन डाई ऑक्साइड (CO_2) गैस के जरिए फुलाया जाता है। ऐसे में बच्चों में यह प्रक्रिया दोहराना थोड़ा खतरनाक माना जाता है। इसलिए अब तक इसे बच्चों में नहीं किया जाता था, लेकिन योग्य तथा प्रशिक्षित टीम, अत्याधुनिक उपकरण एवं लंबे अनुभव के चलते हमने इसे कर दिखाया।

डॉ. नवीन गोयल
जनरल एण्ड लेप्रोस्कॉपीक सर्जन
जी.बी.एच.अमेरिकन हॉस्पीटल

"दक्षिणी राजस्थान में पहली बार हुए इस प्रकार के ऑपरेशन से हमने चिकित्सा के क्षेत्र में अपनी क्षेष्ठता एक बार फिर स्थापित की है। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल की ओर से चिकित्सा के क्षेत्र में स्थापित यह नए आयाम अस्पताल के उन्नत उपकरण तथा प्रशिक्षित डॉक्टर्स टीम तथा योग्य नर्सिंग स्टाफ के बिना संभव न था। हमें खुशी है कि हमने दोनों बच्चों जीवन को बेहतर बनाने सफल प्रयास किया।"

स्पाइन क्लिनिक:

जब जी बी एच अमेरिकन हॉस्पीटल में आधुनिक एवं उन्नत शल्य उपकरणों से युक्त स्पाइन क्लिनीक स्थापित है, तो स्पाइन के दर्द से परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। आधुनिक उपकरणों के माध्यम से अनुभवी न्यूरो सर्जन डॉ. नरेन्द्र मल द्वारा मस्तिष्क की हड्डी का ट्यूमर, सिर व रीढ़ की हड्डी की गंभीर चोट, पीठ का असामान्य दर्द, मस्तिष्क में पानी भरना, स्पाइन कोर्ड की सर्जरी संबंधी विभिन्न समस्याओं की सफल सर्जरी तथा चिकित्सा की जाती है। यह चिकित्सा एवं इससे संबंधित परामर्श रियायती दरों पर होती है।

डायबिटीज मैनेजमेंट: पढ़ें, समझें और बचें

इसे आधुनिक जीवन शैली का प्रभाव कहें या खान-पान में अनियंत्रण या वंशानुगत कारण कहें, कुछ भी हो भारत आज डायबिटीज(मधुमेह) का गढ़ बन चुका है। रोजाना आउटडोर में आने वाला हर दूसरा-तीसरा व्यक्ति मधुमेह का शिकार होता है। यह बीमारी शरीर के लिए खतरनाक है। यदि समय रहते इसकी चिकित्सा नहीं की जाए तो उससे व्यक्ति अंधा हो सकता है। उसकी किडनी डेमेज हो सकती है। हार्ट अटैक से उसकी जान भी जा सकती है। इन समस्याओं से सिर्फ डायबिटीज को कंट्रोल में रख कर ही बचा जा सकता है। डायबिटीज एक ऐसी बीमारी है जिसका इलाज नहीं मैनेजमेंट आवश्यक है।

मधुमेह के कारण रोगी का शरीर भोजन का समुचित रूप से उपयोग नहीं कर पाता, जिसे वह ऊर्जा प्राप्त करने के लिए खाता है। कोशिकाओं को जीवित रहने तथा विकसित होने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। जब हम भोजन करते हैं तब ऊर्जा के एक रूप में विंखडित हो कर उससे ग्लूकोज बनता है। ग्लूकोज शर्करा का ही दूसरा नाम है। ग्लूकोज हमारे रक्त में जाता है और इससे रक्त शर्करा बढ़ जाती है। इंसुलिन एक ऐसा हॉर्मोन है जो अग्नाशय (पैन्क्रियाज़) में बनता है। यह ग्लूकोज को रक्त से कोषाणुओं में पहुंचाने में सहायक होता है, जिससे शरीर, उर्जा हेतु इसका उपयोग कर सके। कोई भी व्यक्ति इंसुलिन के बिना जीवित नहीं रह सकता है।

मधुमेह के दो मुख्य प्रकार है।

प्रकार 1 : मधुमेह, जिसमें पैन्क्रियाज़ द्वारा इंसुलिन नहीं बनाता है।

प्रकार 2: मधुमेह, जिसमें पैन्क्रियाज़ पर्याप्त इंसुलिन पैदा नहीं करता अथवा जो इंसुलिन पैन्क्रियाज़ में बनता है, उसे शरीर उपयोग नहीं कर पाता ।

आज ही उठाएं, डायबिटीज के खिलाफ कदम

☒ **पहले यह पता करें आपको बीमारी होने का कितना खतरा है ?**

अगर आप ऐसे परिवार से है जिसमें आपके माता- पिता को डायबिटीज है या आपका वजन सामान्य से अधिक है। आपकी उम्र 40 से ज्यादा है। साथ ही आप निष्क्रिय जीवन शैली जी रहे हैं। खेल कूद तथा व्यायाम जैसी क्रियाएं नहीं कर रहे है तो डायबिटीज की संभावनाएं ज्यादा रहती है।

☒ **थोड़ा सा वजन घटाएं**

अगर शरीर का वजन ज्यादा है, तो टाइप 2 डायबिटीज होने की अधिक संभावना रहती है। हो सके तो वजन घटाने का प्रयास करें। अपने वजन को संतुलित भोजन करके या, व्यायाम कर के कम कर सकते है। नियमित रूप से कम से कम दिन में 30 मिनिट व्यायाम करें तो उससे 5-7 प्रतिशत वजन कम हो सकता है।

☒ **सात्विक भोजन खाएं**

खाने में सात्विक भोजन करें और कम मात्रा में खाएं। फल, शाक-सब्जी, दाल तथा साबुत अनाज अधिक खाएं। मीठे एवं वसा युक्त भोजन से परहेज करना डायबिटीज का खतरा कम रहता है।

☒ **अपनी स्वास्थ्य की प्रगति पर निगरानी रखें।**

हर रोज नोट करें कि आपने क्या खाया ? क्या पिया और कितने घंटे व्यायाम किया ? वजन घटाने और नियमित घटाए रखने के लिए सबसे अच्छा तरीका है कि आप एक डायरी रखें। दवा नियमित रूप से लें और नियमित रूप से चिकित्सक से परामर्श लें।

☒ **इसी रास्ते पर आगे बढ़ते रहे।**

हर सप्ताह कोई एक नया परिवर्तन अमल में लाएं। अगर कोई चूक हो जाए, तो फिर से शुरूआत करें और सही रास्ते पर आगे बढ़ते रहें।

क्या हो सकते है नुकसान डायबिटीज से ?

डायबिटीज बीमारी नहीं होकर कई बीमारियों की जनक है। वैसे तो डायबिटीज पूरे शरीर के लिए नुकसानदायक है पर विशेषकर यह बीमारी हृदय, आंख, गुर्दा तथा स्नायु तंत्र के लिए बेहद खतरनाक हो सकती है। डायबिटीज से रक्त में कॉलेस्ट्रोल/वसा का बढ़ना तथा रक्त प्रवाह में रूकावट से हृदयघात हो सकता है। आंखों में धुंधला दिखाई देना, मोतियाबिंद जल्दी होना, कालापानी तथा रेटिना या आंख के पर्दे पर धब्बे बनना, अंतत: अंधापन जैसी समस्याएं हो सकती है। डायबिटीज के कारण गुर्दे की कार्यक्षमाता में आई कमी के चलते मूत्र में प्रोटीन का निकलना, रक्तचाप अनियंत्रित रूप से घटना-बढ़ना या गुर्दे का पूरी तरह से काम करना बंद कर देना। वहीं स्नायु तंत्र के तहत हाथ-पैरों में झनझनाहट, पगतलियों में जलन, दर्द तथा सुन्नता, लकवा, पक्षाघात, नपुंसकता तथा कब्ज़ जैसी समस्याएं पैदा हो सकती है। साथ ही जननांगों में बार-बार होने वाला संक्रमण भी डायबिटीज के कारण होता है। डायबिटीज में पैरों की सुरक्षा की ओर भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। शरीर पर कोई घाव न पड़े यह भी ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि डायबिटीज से घाव जल्दी नहीं भरता है।

डॉ. संदीप भटनागर
सीनियर कंसलटेंट, डायबिटोलॉजिस्ट
जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल

थैंक्यू जी बी एच अमेरिकन हॉस्पीटल !

दक्षिणी राजस्थान में पहली बार हुई फॉन्टान कार्डियक सर्जरी

चित्तौड़गढ़ निवासी आठ वर्षीय अनुष्का शर्मा जन्म से हृदय की एक बेहद गंभीर बीमारी से ग्रसित थी। बीते दिनों जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में अनूठे ऑपरेशन के माध्यम से अनुष्का को सामान्य जीवन प्राप्त हुआ। अब अनुष्का आम बच्चों कि तरह बोलने, खेलने सहित सभी सामान्य क्रियाएं करने में सक्षम हो गई है। इस सर्जरी ने उदयपुर में हृदय शल्य क्रिया में नए मानक स्थापित किए हैं। चिकित्सा क्षेत्र में फॉन्टान सर्जरी के नाम से जाना जाने वाला यह ऑपरेशन उदयपुर संभाग सहित दक्षिणी राजस्थान तथा इसके सीमावर्ती क्षेत्रों में पहली बार हुआ है।

क्या थी बच्ची को परेशानी ?

करीब आठ साल पहले जन्मी अनुष्का को जन्मजात हृदय रोग था। इस रोग में रोगी का हृदय आधा ही विकसित हो पाता है। चार भागों में से महज दो भाग ही पूरे शरीर में रूधिर की आपूर्ति करते है। इस प्रकार के रोगी को प्रायः ब्ल्यू बेबी कहा जाता है। ऐसे में थोड़ा चलने पर, बोलने पर तथा सामान्य काम करने पर सांस फूलने के कारण विभिन्न गतिविधियों में भाग नहीं ले पा रही थी । साथ ही पूरा शरीर नीला पड़ जाता है। आठ वर्षीय यह बच्ची इस कारण सामान्य गतिविधियों में भाग नहीं ले पा रही थी।

क्यों पेचिदा थी यह समस्या ?

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के कार्डियक सर्जन डॉ किशोर जोशी ने बताया कि अनुष्का को हृदय की जन्मजात यह विकृति थी। यह एक बेहद पेचिदा समस्या थी। सामान्यतया हृदय के चार भाग होते हैं, निचले दो भाग जिन्हें पंपिंग चैंबर कहा जाता है पूरे शरीर में खून को लाने तथा ले जाने का काम करते है। लेकिन अनुष्का के केस में दायां पंपिंग चैंबर नहीं था। यह चैंबर सामान्य तौर पर शरीर में अशुद्ध खून (ऑक्सीजन रहित) के शुद्धीकरण के लिए फैफड़ों तक धकेलता है लेकिन अुनष्का के हृदय में इसकी अनुपस्थिति अशुद्ध खून को सीधे वहा पहुंचा रही थी जहां से शुद्ध रक्त पूरे शरीर में पहुंच रहा था। ऐसे में अशुद्ध तथा शुद्ध रक्त के मिल जाने से पूरे शरीर को ऑक्सीजन नहीं मिल पा रही थी तथा सामान्य क्रियाशीलता में पूरा शरीर नीला पड़ जाता था।

क्या है फॉन्टान सर्जरी ?

डॉ. जोशी ने बताया कि अनुष्का को इस समस्या से मुक्ति दिलाने के लिए फॉन्टान सर्जरी का उपयोग किया गया। यह सर्जरी बेहद पेचिदा सर्जरी है। उदयपुर संभाग सहित दक्षिण राजस्थान तथा इसके सीमावर्ती क्षेत्रों में पहली बार हुई इस सर्जरी से अनुष्का को नया जीवन मिला है। इस सर्जरी के जरिए अस्पताल की कार्डियक टीम ने अनुष्का के हृदय के दाएं भाग को ही पूरा बाइपास कर दिया। अब शरीर के अशुद्ध रुधिर को हृदय में ला रही नली को सीधे फैफड़ों से ले जाकर जोड़ दिया। वहीं से सीधे शुद्धिकरण के बाद यह रूधिर हृदय के बाएं पंपिंग चैबंर में आने लगा। यहां से यह रूधिर पूरे शरीर में जाने से रूधिर परिसंचरण की प्रक्रिया सुचारू हो गई। शुद्ध तथा अशुद्ध रक्त के मिल जाने से जहां रूधिर में ऑक्सीजन की मात्रा महज 50 से 60 प्रतिशत थी वहीं इस ऑपरेशन से ऑक्सीजन की मात्रा 90-95 प्रतिशत तक बढ़ गई। इस प्रकार आठ वर्षीय अनुष्का को नया जीवन मिल गया। अब वह सामान्य व्यक्ति की तरह जीवन जी रही है। अनुष्का की इस सफल सर्जरी से अपनी सुपुत्री को नया जीवन मिल जाने पर उसके माता-पिता के मुख से सहज ही निलक पड़ा **थैक्यू जी बी एच अमेरिकन हॉस्पीटल !**

अनुष्का अपने माता-पिता के साथ

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में हुए इस ऑपरेशन ने हमारी बच्ची को ठीक कर न सिर्फ इसे बल्कि हमें भी नया जीवन प्रदान किया है। राजस्थान, गुजरात सहित कई बड़े अस्पतालों में दिखाने के बाद भी यह समस्या दूर नहीं हो पा रही थी। ऐसे में जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के डॉक्टर हमारे लिए नया जीवन लेकर आए है।

- कैलाश चंद्र शर्मा, अनुष्का के पिता, निवासी चित्तौड़गढ़

फॉन्टान कार्डियक सर्जरी

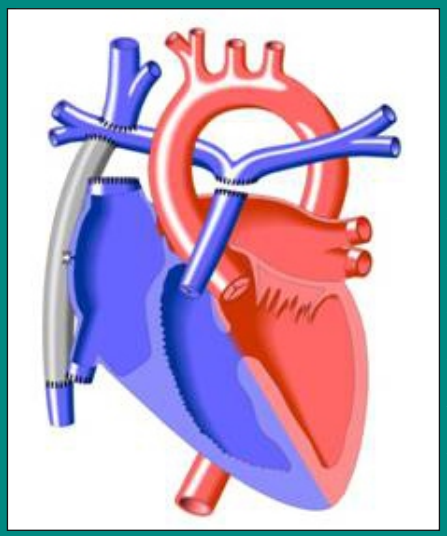

देखा जाए तो यह दोनों ऑपरेशन बेहद पेचिदा थे। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल की योग्य तथा कुशल डॉक्टर्स टीम जिनमें हार्ट एण्ड वास्कूलर सर्जन, डॉ. किशोर जोशी के नेतृत्व में कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. एस. के कौशिक, डॉ. अमित खण्डेलवाल कार्डियक ऐनेस्थेटिक डॉ. समीर गोयल तथा डॉ. दीपिका माण्ड़ोत के सहयोग से सब संभव हो पाया।

सात वर्ष बाद राहुल को हंसता– खेलता देख छलक उठे आंसू

दिल के जटिल ऑपरेशन से राहुल को मिला नया जीवन

अब सात वर्षीय राहुल राजपूत तथा उसके माता पिता की खुशी को कोई ठिकाना नहीं है। आर्थिक मजबूरी के चलते बीते सात साल से अपने जिगर के टुकड़े को तड़फता देख कर भी वे बेबस थे। उनकी नम आंखें तथा कृतज्ञ हाथ जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल तथा चितौड़गढ़ जिला प्रशासन को धन्यवाद देते नहीं थक रहे हैं। जन्मजात दिल में छेद, अविकसित धमनियों के कारण फैफड़ों तक खून का नहीं पहुंच पाना, ऐसे में शरीर द्वारा अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए बनाया गया हद से ज्यादा खून शरीर के लिए घातक बन गया और शरीर पक्षाघात का शिकार हो गया। इस गंभीर समस्या के साथ जी रहे राहुल को चित्तौडगढ़ जिला प्रशासन का सहयोग मिला, उसे जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में भर्ती करवाया गया। वहां हुए इस जटिल ऑपरेशन के बाद राहुल को सामान्य जीवन मिला।

क्या थी मूल समस्या ?

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के कार्डियक सर्जन डॉ. किशोर जोशी ने बताया कि बच्चे के हृदय में बहुत सी विकृतियां थी। बच्चे के हृदय में दो अलग अलग छेद होने के साथ, हृदय का वाल्व (पल्मोनरी वाल्व) अविकसित था। इसके अलावा हृदय से फैफड़ों में रक्त पहुंचाने वाली धमनी भी अविकसित थी। इस कारण जो अशुद्ध रक्त फैफड़ों में जाना चाहिए था, वह शरीर में चला जाता था। इससे पूरा शरीर नीला पड़ जाता था। ऐसे में शरीर अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए आवश्यकता से अधिक रक्त बनाने लगा। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि मस्तिष्क में रक्त का थक्का जमने के कारण राहुल को पक्षाघात हो गया। इस कारण कम उम्र में ही वह निष्क्रिय जीवन जीने के लिए मजबूर हो गया।

राहुल अपने माता–पिता के साथ

जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल को लाख-लाख धन्यवाद है कि यहां के कुशल डॉक्टर्स की वजह से मेरे बच्चे को नया जीवन मिला है। साथ ही चित्तौड़गढ़ के कलेक्टर रवि जैन तथा वहां के डॉक्टर साब जय सिंह मीणा को भी आभारी हूं कि उन्हीं की वजह से यह ऑपरेशन संभव हो पाया।

– नारायण सिंह राजपूत, राहुल के पिता

जटिल ऑपरेशन हुआ सफल

इस गंभीर समस्या के कारण हृदय का पूरा ऑपरेशन बहुत जटिल था। डॉ. जोशी ने बताया कि इस जटिल ऑपरेशन के दौरान अस्पताल की कार्डियक टीम ने राहुल के दिल में कई पेचिदा प्रक्रियाएं पूरी की। बच्चे के दिल के दो अलग–अलग हिस्से के छेद को बंद कर रूकावट पैदा कर रहे वाल्व को हटाया। साथ ही हृदय की अविकसित धमनी को पेच द्वारा पूरी तरह से खोल कर उसकी प्रक्रिया को सुचारू किया। इस जटिल ऑपरेशन में 5 घंटे लगे। अब राहुल एकदम ठीक है। उसे अन्य बालकों की तरह स्वस्थ्य देख कर उसके माता–पिता की आंखों से आंसू छलक पड़े और अस्पताल तथा कार्डियक टीम का प्रति बार–बार आभार जताने लगे।

हार्ट एवं वास्कूलर टीम, जी.बी.एच. अमेरिकन हॉस्पीटल

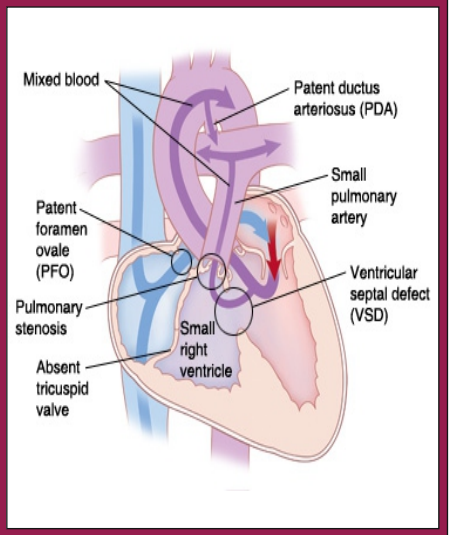

टेट्रोलॉजी ऑफ फैलो

ISO 9001 : 2008

रन फॉर हार्ट: धड़कते दिलों ने नापा फतहसागर

वर्ग, उम्र आदि से परे लोगों ने दिखाया अपना उत्साह

रन फॉर हार्ट में दौड़ते उत्साहित धावक

उदयपुर। वर्ष के सबसे सुहाने मौसम में, शहर की सबसे खुबसूरत जगह पर एक परिधान, एक ध्येय, एक ताल तथा एक-से उत्साह के साथ हर वर्ग, हर उम्र के व्यक्तियों ने दिल से दौड़ लगाई। स्फूर्तिभरी इस स्पर्धा के प्रतियोगियों में अगर किसी प्रकार की होड़ थी तो वह थी दिल के फौलादी इरादे बताने की। मौका था फतहसागर की पाल पर जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल की ओर से आयोजित पांचवीं मैराथन ''रन फॉर हॉर्ट'' का। स्वास्थ्य जागरूकता की दिशा में इस अनूठे कार्यक्रम का इंतजार उदयपुर राइट्स को पूरे साल भर रहता है। बीते पांच वर्षों से आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम का रंगारंग तरीके से आगाज़ हुआ।

किन-किन ने दिखाया अपना दम-खम ?

शहरवासियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए आयोजित इस मैराथन में शहरवासियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। विभिन्न स्कूलों जिनमें दिल्ली पब्लिक स्कूल, अलोक स्कूल, सेंट्रल स्कूल, रेजिडेंसी स्कूल, पैसेफिक कॉलेज, सीटीएई कॉलेज तथा एन.सी.सी. से आए उत्साही बच्चे तथा युवा, सेना तथा पुलिस के जवान, कई कॉर्पोरेट्स से आए प्रोफेशनल्स, विभिन्न संस्थानों से आए लोगों ने भाग लिया। यहां तक पेंशनर्स एसोसिएशन के बैनर तले कई प्रौढ़ तथा वृद्ध धावकों ने भी दौड़ में अपना जौहर दिखाया। सुबह सात बजे जैसे ही अतिथियों ने हरी झण्ड़ी दिखाई युवा, बुजुर्ग और महिलाओं का पूरा जन सैलाब मैराथन में पहले आने के लिए दौड़ पड़ा। इस मैराथन की विशेष बात यह रही कि दौड़ते युवाओं को एस्कोर्टिंग दो ऊंटों ने की।

किसने क्या कहा ?

☒ अगर आप सफलता अर्जित करना चाहते हैं, तो जो भी करें दिल से करें। ऐसे में आपके दिल का स्वस्थ होना परम आवश्यक है। हृदय स्वास्थ्य की दिशा में इस प्रकार का भव्य आयोजन अपने आप में एक मिसाल है। इससे जुड़ कर अधिक से अधिक स्वास्थ्य लाभ लें। **-डॉ. सुबोध अग्रवाल, संभागीय आयुक्त, उदयपुर**

☒ मौसम, जगह तथा उद्देश्य तीनों के लिहाज से रन फॉर हार्ट एक अनुपम आयोजन है। इससे जुड़ कर सभी स्वास्थ्य लाभ ले सकते है।

- यासिन पठान, एडीएम, उदयपुर सिटी

विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए अतिथि

☒ इन दिनों युवाओं में बढ़ते हृदय रोगों के मामले चिंता का विषय बना हुआ है। अनुशासित जीवन शैली तथा संतुलित खानपान उन्हें स्वास्थ्य तथा दीर्घायु जीवन दे सकता है। रन फॉर हार्ट दौड़, इस दिशा में जागरूकता पैदा करने का जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल का यह एक प्रयास है।

- डॉ. देव कोठारी, मैनेजिंग डायरेक्टर, जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल

☒ अपने दिल के स्वास्थ्य के लिए इस दौड़ प्रेरणा ले। रन फॉर हार्ट में आज की दौड़ को नियमित रूप से अपनी जीवन शैली में अपनाएंगे, ताकि हम स्वस्थ तथा दीर्घायु जीवन जी सकें।

- डॉ. वल्लभ पारीख, सीईओ एण्ड मेडिकल डायरेक्टर, जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल

☒ हृदय रोगों में बचाव की दिशा में रन फॉर हार्ट का यह प्रयास उदयपुर संभाग में बहुत लोकप्रिय हो रहा है। इस दौड़ ने कई जिंदगियों को नई रोशनी दी है।

- आनंद झा, सी.ई.ओ., जीबीएच कैंसर हॉस्पीटल

ये रहे विजेता

	वरिष्ठ नागरिक पु.	व.नागरिक महिला	युवा वर्ग पुरुष	युवा वर्ग महिला	बालक वर्ग	बालिका वर्ग
प्रथम	प्रदीप शर्मा	इंदुबाला	चंपालाल खराड़ी	अल्का जोशी	प्रभाशंकर	निकिता चौधरी
द्वितीय	रामसिंह राठौड़	-	दिनेश	घनश्याम	एलेक्स	निकिता
तृतीय	अनूप सिंह झाला	-	कमलेशकुमार राय	अशिता मेहता	सौरभ पालीवाल	वासू

गहरी प्रतिबद्धता के धनी डॉ. देव कोठारी के नेतृत्व में जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल ने पाए उत्कृष्टता के नए मानक

डॉ.देव कोठारी

अधिकांश लोग सिर्फ बातें करते है, लेकिन हम काम करते है। वे इरादे बनाते है, हम उन्हें हासिल करते है। वे झिझकते है और हम आगे बढ़ते हैं। हम इस बात का जीता जागता सबूत है कि कोई संस्थान अपने प्रयासों से कैसे उत्कृष्टता प्राप्त कर सकता है ? बात बेहतरीन मेडिकल सुविधाओं की हो या सामाजिक सरोकारिता की, हर क्षेत्र में जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल श्रेष्ठता का जीवंत उदाहरण है। यह सब संभव है संस्थान के कुशल नेत्तृव के चलते। विशाल सपनों, उच्च आंकाक्षाओं तथा गहरी प्रतिबद्धता के धनी डॉ. देव कोठारी की ओर से उत्कृष्टता के लिए किए गए प्रयास आज भी उतने उत्साही है, जो किसी युवा के होने चाहिए। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल, डॉ. कोठारी जैसी शख्सियत को बतौर प्रबंध निदेशक पाकर गौरवान्वित महसूस करता है।

डॉ. कोठारी का कहना है कि हम जो सोचते हैं वो हम बन जाते हैं। या यूं कहें कि उत्कृष्टता वह कला है जो प्रशिक्षण और आदत से आती है। हम इसलिए सही कार्य नहीं करते कि हमारे अंदर अच्छाई या उत्कृष्टता है, बल्कि वह हमारे अंदर इसलिए हैं क्योंकि हमने सही कार्य किये हैं। हम वह हैं जो हम बार-बार करते हैं, इसलिए उत्कृष्टता कोई कार्य नहीं बल्कि एक आदत है।

विचारक, साहित्यकार, इतिहासकार लेखक तथा राजस्थानी भाषा के विद्वान डॉ. कोठारी को हाल ही में साहित्य के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए प्रदेश की राजधानी में आयोजित कार्यक्रम में रत्नाकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। व्यास बालाबक्ष शोध संस्थान, जयपुर के तत्वावधान में पिंकसिटी प्रेस क्लब सभागार में आयोजित सरस्वती सम्मान समारोह में डॉ. कोठारी को शॉल व श्रीफल भेंट कर प्रमाण पत्र व पांच हजार रूपए का नकद पुरस्कार दिया गया। डॉ. कोठारी महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन की ओर से महाराणा कुंभा सम्मान से सम्मानित है। अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए कई राष्ट्रीय पुरस्कार,-यथा पं. दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय पुरस्कार, 'मुहणोत नैणसी राष्ट्रीय पुरस्कार', 'रामस्नेही राष्ट्रीय पुरस्कार' आदि पुरस्कार मिल चुके है। साथ ही हैदराबाद, राजकोट तथा चैन्नई सहित देश- प्रदेश की कई संस्थाएं डॉ. कोठारी को साहित्य, भाषा, इतिहास तथा चिंतन के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित कर चुकी हैं।

वर्तमान में जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के प्रबंध निदेशक डॉ. कोठारी, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर में प्रोफेसर, डायरेक्टर रिसर्च, डीन तथा रजिस्ट्रार सहित राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर के अध्यक्ष के पदों को भी सुशोभित कर चुके हैं। प्रदेश की राजधानी के बाहर एकमात्र एन.ए.बी.एच. प्रमाणित चिकित्सालय जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल आपके नेत्तृत्व में मेडिकल चिकित्सा के क्षेत्र में निश्चित ही सफलता के नए आयाम स्थापित करता हुआ। भविष्य की महत्ती योजनाओं को क्रियांवित करेगा। ऐसा विश्वास है।

डॉ. कीर्ति जैन सीएमडी
अन्तरराष्ट्रीय कैन्सर रोग विशेषज्ञ

उत्तराखण्ड पीड़ितों की लिए जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल ने दिया 1 लाख, 21 हजार रूपए का सहयोग

उदयपुर। सामाजिक सरोकारिता में सबसे अग्रणी चिकित्सालय जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल की ओर से उत्तराखण्ड पीड़ितों के बचाव, पुनर्विकास तथा निर्माण के उद्देश्य से एक लाख 21 हजार रूपए की राशि का चेक जिला कलेक्टर को सौंपा गया। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के कर्मचारियों, नर्सिंग स्टाफ तथा डॉक्टर्स ने अपने एक दिन के वेतन को इस पावन कार्य के लिए भेंट किया। इस राशि में अस्पताल के प्रबंधन की ओर से भी राशि का सहयोग किया गया है।

मुख्यमंत्री राहत कोष, उत्तराखण्ड़ के नाम का यह एकाउंट पेयी चैक जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के प्रबंध मण्डल जिनमें मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. देव कोठारी, सीईओ डॉ. वल्लभ पारिख तथा सीईओ कैंसर हॉस्पीटल आनंद झा ने जिला कलेक्टर विकास भाले को यह चैक सौंपा।

Welcomes in GBH American Hospital

वरिष्ठ कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. कौशिक की सेवाएं जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में

उदयपुर। डॉ. एस. के. कौशिक भूतपूर्व सीनियर प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष कार्डियोलॉजी विभाग, महाराणा भूपाल चिकित्सालय, तथा पूर्व प्राचार्य-रविन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज,उदयपुर ने जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में डायरेक्टर एण्ड चीफ कंसलटेंट कॉर्डियोलॉजी विभाग में अपनी नियमित सेवाएं देनी आरंभ कर दी है। सेवाएं आरंभ करने पर उनके स्वागत अभिनंदन समारोह में जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के सीईओ तथा मेडिकल डायरेक्टर डॉ. वल्लभ पारीख ने डॉ. कौशिक का अभिनंदन करते हुए इसे बहेद हर्ष का विषय बताया। डॉ. पारीख ने कहा कि चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएं उपलब्ध करवाने वाले इस हॉस्पीटल से आपके जुड़ जाने से हृदय रोगों के उन्मूलन में खासी सफलता मिलेगी।

डॉ. कौशिक को स्वागत करते हुए मेडिकल डायरेक्टर डॉ.पारीख।

प्रदेश के सबसे उन्नत निसंतानता निवारण केन्द्र के साथ जुड़े अनुभवी डॉ. दलाल

डॉ. ऋत्विज दलाल
निःसंतानता निवारण एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ
डी.जी.ओ., डी.एन.बी. एफ.एन.बी.
फैलोशिप इन नेशनल बोर्ड

निःसंतानता निवारण में सुनिश्चित सफलता की गारंटी केवल सुप्रशिक्षित चिकित्सक ही दे सकते हैं। ऐसे में जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल की निःसंतानता इकाई **जेनेसिस आई.वी.एफ. सेंटर** लेकर आई है प्रदेश के सबसे प्रशिक्षित चिकित्सक डॉ. ऋत्विज दलाल को। आई.वी.एफ. एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. दलाल डी.जी.ओ., डी.एन.बी. तथा एफ.एन.बी. जैसी उच्च योग्यता के साथ निःसंतानता निवारण के क्षेत्र में फैलोशिप इन नेशनल बोर्ड भी प्राप्त कर चुके है। डॉ. दलाल कई अंतरराष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय प्रतिष्ठित आई.वी.एफ. संस्थानों से 5000 से ज्यादा आई.वी.एफ. कैसेस का अनुभव प्राप्त कर चुके है। अब डॉ. दलाल ने जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल में अपनी नियमित सेवाएं शुरू की है।

डॉ. दलाल संपूर्ण राजस्थान के एकमात्र एफ.एन.बी. योग्यताधारी डॉक्टर है। आपके जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल से जुड़ जाने से निःसंतानता निवारण केन्द्र द्वारा निःसंतानता निवारण के लिए किए जा रहे प्रयासों को ओर अधिक गति मिलेगी। क्षेत्र में जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल के सबसे अत्याधुनिक निःसंतानता निवारण इकाई जैनेसिस आई.वी.एफ. सेंटर में डॉ. दलाल के जुड़ने के बाद से निःसंतानता उन्मूलन को नए आयाम मिलेगें। प्रदेश की राजधानी जयपुर के बाद प्रदेश के एकमात्र एन.ए.बी.एच. प्रमाणित चिकित्सालय में डॉ. दलाल द्वारा अपनी सेवाएं देना शुरू करने से स्थानीय लोगों को विश्वस्तरीय इलाज किफायती दरों पर मिलेगा, वहीं पूर्व में असफल रहे आई.वी.एफ. दंपत्तियों में भी आशा की नई किरण जागेगी। इस मौके पर संस्थान के सी.ई.ओ. डॉ. वल्लभ पारीख ने बताया कि उदयपुर तथा सीमावर्ती क्षेत्र में निःसंतानता निवारण को लेकर निराश दंपत्तियों में आशा की नई किरण जगेगी।

प्रतिष्ठा में

संरक्षक
डॉ. कीर्ति जैन
सी.एम.डी.

संपादक मण्डल
डॉ. अंशु जैन
एम.डी.(रेडिएशन ऑंकोलॉजी)
डॉ. आशीष जैन
एम.बी.बी.एस.
डॉ. वी.डी.पारीख
एम.एस.
सी.ई.ओ. एण्ड मेडिकल डायरेक्टर
आनंद झा
एम.बी.ए., एम.फिल.
सी.ई.ओ. कैंसर हॉस्पीटल

सह- संपादक
आशीष चाष्टा
एलएलबी, एमबीए

प्रकाशक : जीबीएच अमेरिकन हॉस्पीटल
101, कोठी बाग, भट्ट जी की बाड़ी, उदयपुर 313001, राजस्थान
Ph. : +91-0294-3056000, 2426000 Fax : 0294-2526982 E-mail : gbharogyam@gmail.com Website : www.gbhamericanhospital.com

मुद्रक
चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., उदयपुर
फोन 0294-2584071
COPL/11360